चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	26.11.25	4	3-5

मोरिंगा पर पर्यावरणीय प्रभावों का शोध जरूरी

एचएयू में स्पार्क के तहत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मंगलवार को स्पार्क परियोजना के तहत मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ विषय पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज और विशिष्ट अतिथि स्पार्क के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रबीब्रत मुखर्जी रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

कुलपति प्रो. कांबोज ने कहा कि तापमान, आर्द्रता, वर्षा और मिट्टी जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि, फूलन-फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण मोरिंगा के औषधीय गुणों में होने वाले बदलाव पर शोध को अत्यंत आवश्यक बताते हुए उन्होंने कहा कि भविष्य की टिकाऊ कृषि, पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उत्पाद उद्योगों के लिए ऐसे अध्ययन अहम भूमिका निभाएंगे। इस अवसर पर कुलपति ने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का विमोचन भी किया।

अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के साथ कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत : संस्थान

डॉ. रबीब्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण मोरिंगा के बीज और पत्तियों में टैनिन व एंटीऑक्सीडेंट गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों का शोध कार्य किया जाएगा। स्पार्क के तहत मोरिंगा प्रोजेक्ट से जुड़ी विभिन्न गतिविधियां देशभर में संचालित की जा रही हैं और एचएयू में भी इस दिशा में विस्तृत शोध जारी है।

कार्यक्रम में अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि मोरिंगा, जिसे ड्रमस्टिक या सहजन के रूप में जाना जाता है, एक उष्णकटिबंधीय पौधा है जिसकी प्रमुख रूप से भारत और अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों में खेती होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	26-11-25	5	3-6

हकृवि में स्पार्क के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार, 25 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांम्बोज कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जबकि 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रबीब्रत मुखर्जी विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद रहे।

14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी.एच.डी. के विद्यार्थी भाग ले रहें है। मंच का संचालन छात्रा यामिनी टॉक ने किया।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कम्बोज कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। मोरिंगा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि बदलते पर्यावरणीय परिदृश्य में मोरिंगा जैसे पौधों का अध्ययन भविष्य की टिकाऊ कृषि पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उत्पादन उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

डॉ. रबीब्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिंन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने मोरिंगा प्रोजेक्ट को लेकर स्पार्क द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जैव रसायन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोक्स ने बताया कि इस कार्यशाला में हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	26-11-25	4	2-5

मोरिंगा के औषधीय गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों का शोध करना है जरूरी : बलदेव

हकृवि में स्पार्क के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीआक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जबकि 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डा. रबीब्रत मुखर्जी विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के विद्यार्थी भाग ले रहें है।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। उन्होंने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि बदलते पर्यावरणीय परिदृश्य में मोरिंगा जैसे पौधों का अध्ययन भविष्य की टिकाऊ कृषि पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उत्पादन उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इस प्रकार की पहल वैज्ञानिक सहयोग, नवाचार और क्षमता निर्माण को एक नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कुलपति ने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का भी विमोचन किया। डा. रबीब्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीआक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी है।

अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. बलदेव राज कम्बोज • जागरण

उष्ण कटिबंधीय पेड़ है मोरिंगा : डा. राजबीर गर्ग

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्ण कटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं। जैव रसायन विभाग की विभागाध्यक्ष डा. जयंती टोक्स ने बताया कि इस कार्यशाला में हरियाणा व दिल्ली सहित अन्य प्रदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	26-11-25	3	3-6

वर्कशाप • मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ पर

जलवायु परिवर्तन के कारण मोरिंगा के औषधीय गुणों पर पड़ रहा असर, शोध जरूरी : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

मोरिंगा के बीज, पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट पर प्रभाव पर रिसर्च

तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने यह बात कही। 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रबीन्नत मुखर्जी विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

कुलपति प्रो. बी आर काम्बोज ने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत आवश्यक है। बदलते पर्यावरणीय परिदृश्य में मोरिंगा जैसे पौधों का अध्ययन भविष्य की टिकाऊ कृषि पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उत्पादन उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

हिसार | एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के साथ।

एचएयू में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी

डॉ. रबीन्नत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रॉपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में एचएयू में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने मोरिंगा प्रोजेक्ट को लेकर स्पार्क द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी दी।

सहजन की पत्तियां प्रोटीन का बड़ा स्त्रोत

अनुसंधान के निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है व भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं।

कई राज्यों के प्रतिभागी ले रहे भाग

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने कार्यशाला में सभी का धन्यवाद किया। जैव रसायन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोक्स ने बताया कि इस कार्यशाला में हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कार्यशाला में प्रतिभागियों को मोरिंगा से संबंधित वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न सत्रों के माध्यम से जानकारी दी जाएगी। मंच का संचालन छात्रा यामिनी टॉक ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	26-11-25	5	3-5

मोरिंगा गुणों पर पर्यावर्णीय प्रभावों का शोध जरूरी : प्रो. काम्बोज

हकृवि में स्पार्क के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार, 25 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि जबकि 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रबीब्रत मुखर्जी विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के विद्यार्थी भाग ले रहें है।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के साथ।

मोरिंगा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत आवश्यक है।विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इस प्रकार की पहल वैज्ञानिक सहयोग, नवाचार और क्षमता निर्माण को एक नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कुलपति ने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का भी विमोचन किया। डॉ. रबीब्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने मोरिंगा प्रोजेक्ट को लेकर स्पार्क द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	26-11-25	9	3-8

कार्यक्रम

हकृवि में स्पार्क के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर प्रभावों पर शोध जरूरी

सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के विद्यार्थी ले रहें हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जबकि 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रबीव्रत मुखर्जी विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के विद्यार्थी भाग ले रहें है।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पुस्तिका का विमोचन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। मोरिंगा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि बदलते पर्यावरणीय परिदृश्य में मोरिंगा जैसे पौधों का अध्ययन भविष्य की टिकाऊ कृषि पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उत्पादन उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है। कुलपति ने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का भी विमोचन किया।

एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर होगी रिसर्च : डॉ. मुखर्जी

डॉ. रबीव्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने मोरिंगा प्रोजेक्ट को लेकर स्पार्क द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश नेरा ने कार्यशाला में सभी का धन्यवाद किया। जैव रसायन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ जयंती टोरस ने बताया कि इस कार्यशाला में हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	25.11.2025	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के तहत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ

हिसार (सच कहूँ/मुकेश)।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क परियोजना के अंतर्गत मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट एवं टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभाव विषय पर 14 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। शुभारंभ सत्र में कुलपति प्रो. बलदेव राज कम्बोज मुख्य अतिथि तथा स्पार्क के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रवि व्रत मुखर्जी विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यशाला में सात राज्यों से स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के प्रतिभागी शामिल हुए। कुलपति प्रो. कम्बोज ने कहा कि तापमान, वर्षा, आर्द्रता और मिट्टी जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों में आ रहे बदलावों पर शोध को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि यह अध्ययन टिकाऊ कृषि, पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक स्वास्थ्य उद्योगों के लिए नई दिशा देने वाला साबित होगा। उन्होंने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का भी विमोचन किया। डॉ. रवि व्रत मुखर्जी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान मोरिंगा की पत्तियों व बीजों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट गुणों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाएगा। हकृवि में इस फसल पर पहले से चल रहे शोध कार्यों की भी जानकारी साझा की गई।

कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के साथ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	25.11.2025	--	--

हकृवि में स्पार्क के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क के अंतर्गत 'मोरिंगा की वृद्धि, बीज गुणवत्ता, एंटीऑक्सीडेंट और टैनिन गुणों पर पर्यावरणीय प्रभावों की समझ' पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जबकि 'स्पार्क' के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. रवीव्रत मुखर्जी विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। 14 दिवसीय इस कार्यशाला में सात राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के विद्यार्थी भाग ले रहें है। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि तापमान आर्द्रता वर्षा और मिट्टी के प्रकार जैसे पर्यावरणीय कारक मोरिंगा की वृद्धि दर, फूलन, फलन और बीज गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करते हैं। मोरिंगा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण इसके औषधीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध अत्यंत

आवश्यक है। कुलपति ने कार्यशाला से संबंधित पुस्तक का भी विमोचन किया। डॉ. रवीव्रत मुखर्जी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिन और एंटीऑक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। इसी कड़ी में हकृवि में भी मोरिंगा फसल पर विभिन्न प्रकार के शोध कार्य जारी हैं। उन्होंने मोरिंगा प्रोजेक्ट को लेकर स्पार्क द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि मोरिंगा को 'ड्रमस्टिक' या सहजन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है य भारत और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में इसकी खेती होती है। इसके पेड़ का हर हिस्सा स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसकी पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्त्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने कार्यशाला में सभी का धन्यवाद किया। जैव रसायन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ जयंती टोक्स ने बताया कि इस कार्यशाला में हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में प्रतिभागियों को मोरिंगा से संबंधित वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न सत्रों के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी जाएगी। मंच का संचालन छात्रा यामिनी टाँक ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।